विज्ञानात्मा सहदेवैश्च सर्व्वैः प्राणा भूतानि सम्प्रतिष्ठन्ति यत्र । तदक्षरं वेदयते यस्तु सौम्य स सर्व्वज्ञः सर्व्वमेवाविवेशेति ॥ ११ । ५२ ॥

इति श्रीप्रश्नोपनिषदि चतुर्थप्रश्नः समाप्तः ।

अथ प्रश्नोपनिषद्गतः पंचमप्रश्नः ॥

अथहैनं शैब्यः सत्यकामः पप्रच्छ । सयोह वै तद्भगवन्मनुष्येषु प्रायणान्तमोंकारमभिध्यायीत कतमं वा वसतेन लोकं जयतीति ॥ १ । ५३ ॥

' विज्ञानात्मा ' < जीव > अर्थात् < तिस सर्व के आश्रयरूप अक्षर को जो उक्त अर्थ का जिज्ञासु (ग्राहक) जीवात्मा ' वेदयते ' < जानता है > ' स सर्वज्ञः सर्वमेवाविवेशेति ' < सो सर्वज्ञ हुआ सर्व के ताईं ही प्रवेश को पावता है > अर्थात् सर्वज्ञ सर्वात्माही होता है ॥ ११ । ५२ ॥

प्रश्नोपनिषद्के चतुर्थप्रश्नकी भाषाटीका समाप्त हुई ।

प्रश्नोपनिषद्गत पंचमप्रश्न की भाषाटीका का प्रारम्भ ।

१ ॥ हे सौम्य ! हे प्रियदर्शन ! [इसप्रकार चतुर्थ प्रश्नबिषे कहे प्रमाण उत्तमाधिकारी को पदार्थ के शोधन पूर्वक वाक्यार्थ के ज्ञानसे अक्षर ब्रह्मकी प्राप्तिकहके अब इसबिषे मध्यमाधिकारी मन्द वैराग्यवाले और " ॐ " ऐसे आत्मा को ध्यान करनेवाले ऽ ' प्रणवो धनुः ' < ॐकार धनुष है > ऽ इत्यादि मुंडक उपनिषद्के मंत्र से सूचित किया जो ब्रह्मलोक की प्राप्ति तिस द्वारा क्रम

UNIVERSITÄTS-BIBLIOTHEK HEIDELBERG
http://digi.ub.uni-heidelberg.de/diglit/atharvavediyaprasnopanisad1921/0076
gefördert durch die DFG